महात्मा गांधी का राज्य (State)का सिद्धांत:

महात्मा गांधी के अनुसार, राज्य एक आवश्यक बुराई (Necessary Evil) है। उन्होंने राज्य को व्यक्ति के विकास में बाधक मानते हुए इसका विरोध किया। गांधी जी का मानना था कि राज्य दंड और कानून का भय दिखाकर व्यक्ति से अपनी बात मनवाता है, जिससे हिंसा और पाशविक बल को बढ़ावा मिलता है और नैतिकता का मार्ग अवरुद्ध होता है।उनका मानना था कि राज्य सत्ता का केंद्र होता है और सत्ता लोगों को स्वतंत्रता से वंचित करती है। इसलिए उन्होंने न्यूनतम राज्य (Minimal State) की वकालत की।

महात्मा गांधी का राज्य (State) संबंधी विचार उनके नैतिकता, अहिंसा और ग्राम स्वराज की अवधारणा पर आधारित था। गांधीजी विकेन्द्रीकरण, स्वशासन और नैतिक मूल्यों पर आधारित राज्य के पक्षधर थे।

* गांधीजी के राज्य संबंधी प्रमुख सिद्धांत:

(1) अहिंसक राज्य (Non-violent State): गांधीजी का राज्य बल और हिंसा पर आधारित नहीं होगा, बल्कि यह नैतिकता और अहिंसा पर टिका होगा।

उनका विश्वास था कि सच्चा राज्य वही है जो अपने नागरिकों को समान अवसर प्रदान करे।

(2) आदर्श राज्य (Ideal State): गांधीजी ने “रामराज्य” को आदर्श राज्य की संज्ञा दी। आदर्श राज्य वह है जो सत्य, अहिंसा, समानता और न्याय पर आधारित हो।इसमें हर व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त होंगे और शोषण मुक्त समाज होगा।

(3) विकेंद्रीकरण (Decentralization):

गांधीजी ने सत्ता के विकेंद्रीकरण पर बल दिया और “ग्राम स्वराज” (Village Self-rule) की अवधारणा प्रस्तुत की।

उनके अनुसार, प्रत्येक गांव को स्वायत्त होना चाहिए और अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं करना चाहिए।

यह राज्य “नीचे से ऊपर” (Bottom-up Approach) की व्यवस्था पर आधारित होगा, न कि “ऊपर से नीचे” (Top-down Approach) पर।

(4) ग्राम स्वराज (Village Republics):

गांधीजी का मानना था कि गांव ही भारतीय समाज की आत्मा है।उन्होंने कहा कि प्रत्येक गांव को एक स्वतंत्र गणराज्य के रूप में कार्य करना चाहिए, जहां निर्णय ग्रामसभा द्वारा लिए जाएं।आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर गांव ही सशक्त भारत का निर्माण कर सकते हैं।

(5) न्यूनतम राज्य (Minimal State):

गांधीजी ने राज्य के हस्तक्षेप को न्यूनतम रखने की वकालत की। उनका विश्वास था कि यदि समाज नैतिक मूल्यों को अपनाए तो राज्य की आवश्यकता धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगी।

(6) राज्य और नैतिकता (State and Morality): गांधीजी का मानना था कि राजनीति और नैतिकता एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि राज्य को नैतिक सिद्धांतों के आधार पर चलाया जाना चाहिए, न कि बल और सत्ता के प्रयोग से।उनके अनुसार, एक सच्चा राज्य वही है जो जनता की सेवा करे और सत्य व अहिंसा के मार्ग पर चले। उन्होंने "स्व-शासन" (Self-rule) पर बल दिया, जहां लोग स्वयं अनुशासन का पालन करें।

(7) सत्याग्रह और राज्य: गांधीजी का राज्य केवल जनता की इच्छा से संचालित होगा और यदि सरकार अन्यायपूर्ण नीतियाँ अपनाए तो सत्याग्रह के माध्यम से उसका विरोध किया जाएगा।उनका सत्याग्रह हिंसक विद्रोह का नहीं, बल्कि अहिंसक प्रतिरोध (Non-violent Resistance) का माध्यम था।

* गांधी जी के राज्य संबंधी विचारों के कुछ मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

• राज्य एक आवश्यक बुराई है, क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतंत्रता और स्वावलंबन को कम करता है।

• राज्य का आधार हिंसा और पाशविक शक्ति है, जो नैतिक मूल्यों के खिलाफ है।

• राज्य व्यक्ति के नैतिक विकास में बाधक है, क्योंकि यह व्यक्ति को अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं देता।

• राज्य आत्मा रहित मशीन है, जो मानव जाति को हानि पहुंचाती है।

• गांधी जी ने राज्य विहीन समाज की कल्पना की थी, जिसमें व्यक्ति बिना किसी बाहरी दबाव के अपने नैतिक मूल्यों के अनुसार जीवन व्यतीत कर सके।

गांधी जी के राज्य संबंधी विचारों की आलोचना भी की जाती है। महात्मा गांधी के राज्य के सिद्धांत को अराजकतावादी माना जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि राज्य के बिना समाज में अराजकता फैल जाएगी और कमजोर लोगों का शोषण होगा। लेकिन गांधी जी का मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता और सामाजिक व्यवस्था केवल तभी प्राप्त हो सकती है जब राज्य की शक्ति को कम किया जाए और व्यक्ति को नैतिक रूप से अधिक जिम्मेदार बनाया जाए।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि गांधी जी के राज्य संबंधी विचार उनके व्यापक दार्शनिक और नैतिक दृष्टिकोण का हिस्सा थे। उनके विचारों को समझने के लिए उनके सत्य, अहिंसा, और स्वराज जैसे सिद्धांतों को भी समझना आवश्यक है।

- निष्कर्ष:

महात्मा गांधी का राज्य बल और सत्ता पर नहीं, बल्कि नैतिकता, सत्य और अहिंसा पर आधारित होता है। वे विकेंद्रीकरण, स्वशासन और ग्राम स्वराज के पक्षधर थे। उनका मानना था कि एक आदर्श समाज में राज्य की आवश्यकता धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगी और लोग आत्म-नियंत्रण के माध्यम से जीवन व्यतीत करेंगे।